**International Journal of Social Science and Humanities**
**www.humanitiesjournals.com**
**Online ISSN: 2664-8628, Print ISSN: 2664-861X**
**Received: 10-03-2023, Accepted: 25-13-2022, Published: 11-04-2023**
**Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 93-96**

# क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका : बिहार के विशेष संदर्भ में

**नरेन्द्र भारती**
पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर (नेट), राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

**सारांश**
अपनी जनसंख्या के कारण भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र कहलाता है। विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत की विशेषता संसदीय प्रणाली, संघीय ढ़ांचा और बहुदलीय शासन प्रणाली की व्यवस्था है। ये संस्थायें लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय लोकतंत्र में राष्ट्रीय दलों से कम महत्वपूर्ण भूमिका क्षेत्रीय दलों ने भी नहीं निभायी है। भारत के चुनाव आयोग द्वारा समय–समय पर दलीय प्रतियोगिता की स्थिति की समीक्षा की जाती है। सभी राजनीतिक दलों को जो राज्य विधानमंडल या संसदीय चुनाव में भाग लेना चाहते हैं, उन्हें भारत के चुनाव आयोग द्वारा पंजीकृत होना आवश्यक है। पंजीकृत दलों को उनकी पार्टी की चुनावी सफलता के मानदंड पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर की पार्टियों के रूप में मान्यता दी जाती है। चुनाव आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त दल को आरक्षित चुनाव चिन्ह, राज्य द्वारा संचालित टेलीविजन और रेडियो पर मुफ्त प्रसारण समय, चुनाव की तारीखों के निर्धारण में परामर्श और चुनावी नियमों और विनियमों को स्थापित करने में सुझाव देने जैसे विशेषाधिकार प्राप्त है। भारत के चुनाव आयोग (2021) के आधिकारिक प्रकाशन के अनुसार, भारत में पंजीकृत दलों की कुल संख्या 2858 है, जिनमें से 8 राष्ट्रीय दल है, 54 राज्य दलों के रूप में मान्यता प्राप्त हैं और 2796 गैर–मान्यता प्राप्त दल हैं। भारतीय दलीय प्रणाली व्यवस्था में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय दलों की भूमिका एवं उपस्थिति लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। क्षेत्रीय दल ''ऐसी पार्टी, जो आम तौर पर एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र में काम करती है और इसकी गतिविधियां केवल एक या कुछ राज्यों तक ही सीमित होती है।'' इसके अलावा राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के अधिक व्यापक उद्देश्यों की तुलना में ये क्षेत्रीय दल एक विशेष क्षेत्र के हितो, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
क्षेत्रीय दल आवश्यक रूप से संबंधित विशिष्ट मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जैसे–नदी जल का बंटवारा, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय रोजगार के अवसर पैदा करने के उपाय, सुदृढ़ शिक्षा की व्यवस्था करना, लोगों को स्थानीय जरूरतों को पूरा करना आदि। सरल शब्दों में कहा जाए तो क्षेत्रीय दल अपने उद्देश्य एवं दृष्टिकोण दोनों ही मामलों में राष्ट्रीय दलों से भिन्न होते हैं; संचालन के साथ–साथ उनके द्वारा अपनाएं जाने वाले तरीके भी भिन्न होते हैं।

**मूल शब्दः** लोकतंत्र, क्षेत्रीय आवश्यकताएँ, स्थानीय जरूरतें, क्षेत्रीय मांगे, राजनीतिक दल

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और संविधान हमारे देश भारत का है। विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ महज 100 किलोमीटर पर भाषा, संस्कृति, राजनीति एवं भिन्न–भिन्न चीजों में विविधता देखने को मिलता है। जनतांत्रिक प्रणाली में राजनीतिक दलों की विशिष्ट भूमिका होती है। टी०वी० स्मिथ के अनुसार ''राजनीति दल जनतंत्र की रीढ़ है तथा जनता की समस्याओं को राजनीतिक रूप देना इनका प्रमुख काम है। क्षेत्रीय राजनीतिक दल नीचे से ऊपर तक दृष्टिकोण का लक्ष्य रखते हैं और उसका अनुसरण करते हैं। पार्टी प्रायः विकास, जाति, धर्म, समुदाय, स्थानीय मुद्दे आदि पर वोट प्राप्त करते हैं। भारत में 28 राज्य और 8 केन्द्रशासित प्रदेश है। इन सभी प्रदेशों में कोई न कोई क्षेत्रीय पार्टी राज्य में स्थापित है लेकिन भारत के कुछ प्रमुख राज्य– बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल असम आदि जैसे कुछ राज्यों में क्षेत्रीय दलों की संख्या बहुत अधिक है। क्षेत्रीय दल स्थानीय प्रशासन या सरकार बनाने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की बहुत बड़ी भूमिका है, क्षेत्रीय दल लोकतंत्र प्रणाली निर्माण करने में इसके साथ–साथ नया लोकतंत्रात्मक परिवेश बनाने में भी मुख्य भूमिका निभाते हैं। किसी भी राष्ट्र को निरपेक्ष रूप से लोकतांत्रिक राज्य बनाने की जिम्मेदारी वहाँ के जनता की होती है तथा संविधान उसके पथ–प्रदर्शक का कार्य करती है। लेकिन इसकी सफलता काफी हद तक राजनैतिक दलों पर निर्भर करती है, क्योंकि राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक सहभागिता तथा राजनीतिक भर्त्ती का कार्य दलों द्वारा ही संपन्न होता है। इसी अन्तःक्रिया से राजनीतिक संस्कृति में परिवर्त्तन आता है। राजनैतिक पार्टी अपना वैभव तभी दिखा सकती है, जब राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ दलों के गठन एवं संचालन की स्वतंत्रता हो। स्वतंत्रता पश्चात् से वर्तमान काल तक भारत के राजनैतिक दल अपनी प्रशंसनीय भूमिका के कारण भारत के गणतंत्र की गतिशीलता में योगदान कर रही है।

भाषा के आधार पर भारत में राज्यों का पुनर्गठन और वर्गीकरण की 1956 में शुरू हुई प्रक्रिया ने क्षेत्रीय दलों के निर्माण की नींव रखी। भारत में राजनीतिक प्रतियोगिता के मूल इकाई के रूप में राज्यों का उदय 1990 के बाद हुआ, जिसका कारण था दलीय प्रतिस्पर्धा के स्वरूप एवं यांत्रिकी में परिवर्तन। बलदेव राज नायर के अनुसार 21वीं सदी के प्रारंभ में प्रत्येक राज्य में दल व्यवस्था और राजनीतिक सूर–ताल भिन्न था।1 प्रदीप छिब्बर [1] मानते हैं कि भारत के राजनीतिक जीवन में दलों की भूमिका अपेक्षाकृत अधिक है। अतः राजनीति का मर्म दलों की भूमिका के अध्ययन के बिना नहीं जाना जा सकता। भारत में क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दलों की भूमिका और स्थिति को समझे बिना राज्य की राजनीति नहीं जानी जा सकती।

समकालीन बिहार की राजनीति में क्षेत्रीय दलों ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोकतंत्र में वस्तुतः जनता अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से ही सहभागिता करती है। बिहार की राजनीति में आज प्रभावशाली तीन प्रमुख दलों में दो क्षेत्रीय दल ही हैं। कांग्रेस प्रभुत्व के काल में बिहार भी राष्ट्रीय मुख्य धारा के साथ थी। राजनीतिक दृष्टि से बिहार गतिशील एवं स्पन्दनशील रहा है। 1990 के दशक में बिहार सामाजिक राजनीतिक उथल–पुथल के दौर से गुजरा। ऊँची–जातियों के प्रभुत्व की विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था में तीव्रता से परिवर्त्तन हुआ। इस दौर की विशेषताओं में सर्वप्रमुख है, कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्वशील स्थिति से पतन और हाशिया पर जाना। प्रमुख

वामपंथी दल भारत की कम्युनिष्ट पार्टी और कम्युनिष्ट पार्टी मार्क्सवादी बिहार की राजनीति में लघु कारक बन गए। प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी भारतीय जनता दल भी वर्षों बिहार की राजनीतिक में राज्यस्तरीय जद (यू) की कनीय साझेदार बनकर रही।

बिहार की राजनीति में कांग्रेस का हाशिये पर जाना एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिघटना है। 110 वर्ष पूर्व जब बंगाल से पृथक कर बिहार प्रांत का गठन हुआ तब से यह राज्य कांग्रेस का गढ़ रहा है। 1919 और 1935 के भारत सरकार अधिनियम के तहत प्रांतीय परिषद् एवं विधानसभा तथा केन्द्रीय धारा सभा के चुनावों में कांग्रेस ही सर्वप्रमुख दल बनकर उभरा था। स्वतंत्रता के बाद भी कई दशक तक कांग्रेस ही बिहार में अग्रणी राजनीतिक दल बनी रही। 1967–71 और 1977–79 का दौर कांग्रेस के लिए प्रतिकूल था, परन्तु इसने क्रमशः 1971–72 और 1980 में अपनी प्रभुत्वशील स्थिति पुनः प्राप्त करने में सफलता पाई थी।

किन्तु 1990 के बाद कांग्रेस के निरन्तर क्षरण से रिक्त स्थान की पूर्ति क्षेत्रीय दलों ने ही की। क्योंकि 1989–90 कांग्रेस के स्थान पर ही आई। जनता दल भी शीघ्र ही विखंडन का शिकार हो गई। आज राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाईटेड तथा लोकजनशक्ति पार्टी बिहार के मुख्य क्षेत्रीय दल है। वर्ष 2000 में बिहार के विभाजन और पृथक राज्य के रूप में झारखंड के गठन ने राज्य की राजनीति जनसांख्यिकी में परिवर्तन लाया। झारखंड मुक्ति मोर्चा और जनजाति केन्द्रित दलों की भूमिका अब राज्य में नहीं रही। 1972 से 1990 के दशक के पूर्वाह्न तक बिहार की राजनीति में क्षेत्रीय दलों के लिए अवसान का काल रहा।

भारतीय लोकतंत्र में इनकी क्या भूमिका रही है, ऐसे अनेक प्रश्न एक जिज्ञासु मस्तिष्क में उठते रहते हैं। परन्तु क्षेत्रीय दलों के संगठन और उनकी भूमिका के गुण–दोषों का निष्पक्ष रूप से गहन और सूक्ष्म परीक्षण किए बिना यथार्थता का बोध नहीं हो सकता। अतः प्रस्तुत अध्ययन से क्षेत्रीय दलों के बारे में प्रवृतिगत सामान्य तथ्य उभरकर सामने आ सकेंगे। जिससे अंततः भारत में दलीय लोकतंत्र में गुणात्मक सुधार करने और उसे सशक्त बनाने में मदद मिलेगी।

## क्षेत्रवाद के विकास के कारण

कालक्रम में भारत में सामान्य रूप से और विशेष रूप से बिहार में क्षेत्रवाद अत्यधिक बढ़ गया प्रतीत होता है। बिहार में क्षेत्रीय दलों का विकास स्वतंत्राता के पश्चात् ही हुआ है। यहाँ दो कारण ध्यान देने योग्य हैं, वे है – (1) क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के विकास ने गति पकड़नी शुरू कर दी, क्योंकि वे मूल रूप से केन्द्र सरकार से अधिक राजनीतिक स्वायत्तता और संचालन की स्वतंत्रता चाहते हैं। क्षेत्रीय दल हमेशा राष्ट्रीय दलों से असुरक्षित महसूस करती है। मत्स्य न्याय के अनुसार बड़ी मछली हमेशा छोटी मछली को निगल जाती है। इसलिए क्षेत्रीय राजनीतिक दल शासित राज्य में अपनी राजनीतिक पहचान बनाने की कोशिश करते हैं और केन्द्र सरकार के चंगुल से मुक्त होना चाहते हैं। क्षेत्रीय दल सामान्यतः यह मानते हैं कि राज्यों के स्थानीय मामलों में केन्द्र के बढ़ते हस्तक्षेप से क्षेत्रीय भावनाओं और स्थानीय हितों को ठेस पहुँचती है। इन्हीं कारणों से स्वायत्तता की मांग क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का एक सामान्य उद्देश्य रहा है। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में क्षेत्रीय दल एक निश्चित क्षेत्र में अपना महत्व बढ़ाने को प्रयासरत रहते हैं, जिससे भारतीय राजनीतिक में क्षेत्रीय दल का विकास दिन–प्रतिदिन होता जा रहा है।

**तालिका 1:** लोकसभा चुनावों में क्षेत्रीय दलों की स्थिति (वर्ष 1977 से 2019 तक)

| लोकसभा चुनाव का वर्ष | क्षेत्रीय दलों का निष्पादन (प्राप्त स्थान) | प्राप्त स्थानों की प्रतिशत : | प्राप्त मतों का प्रतिशत : |
|---|---|---|---|
| 1977 | 49 | 9.04 | 8.81 |
| 1980 | 34 | 6.45 | 7.69 |
| 1984 | 58 | 11.27 | 11.56 |
| 1989 | 27 | 5.10 | 9.28 |
| 1991 | 50 | 9.61 | 12.98 |
| 1996 | 127 | 23.38 | 21.34 |
| 1998 | 97 | 17.86 | 18.21 |
| 1999 | 158 | 29.09 | 26.33 |
| 2004 | 159 | 29.28 | 28.90 |
| 2009 | 144 | 26.52 | 28.10 |
| 2014 | 200 | 36.8 | 22.64 |
| 2019 | 177 | 32.65 | 21.01 |

**स्त्रोत :** भारत निर्वाचन आयोग : नई दिल्ली

दूसरा महत्वपूर्ण कारण है, जो भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के विकास से संबंधित है, वह क्षेत्रवाद का नकारात्मक परिप्रेक्ष्य है। यह तब उभरता है जब राज्य केन्द्र से अलग होने की मांग करते है और अपनी खुद की एक स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करते है। नदियों के पानी के बंटवारे को लेकर राज्यों के बीच विवाद, राज्यों द्वारा जातीय, सांस्कृतिक एवं भाषा विभिन्नता ने भी क्षेत्रवाद की भावनाओं को जन्म दिया है। हालाँकि ऐसे अन्य कई कारक है, जिनके परिणाम स्वरूप भारत में क्षेत्रवाद का विकास हुआ है।

भारत एक बहुभाषी, बहुजातीय, बहुक्षेत्रीय और विभिन्न धर्मो का देश है। यही कारण है कि आज भारत में कई क्षेत्रीय दल है, यही उनके उदय के कारण है। उनमें से सबसे मुख्य कारण जातीय, सांस्कृतिक एवं भाषायी विभिन्नता है तथा विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की अपनी समस्याएँ हैं, जिन पर राष्ट्रीय दलों या केन्द्रीय नेताओं का ध्यान प्रायः नहीं जाता है, जिसके कारण क्षेत्रीय दलों का उदय होता है।भारतीय संघीय प्रणाली की विभिन्न इकाइयों की अपने उप–सांस्कृतिक क्षेत्रों को बनाएँ रखने की इच्छा और स्व–सरकार की अधिक से अधिक कामना ने क्षेत्रवाद को बढ़ावा दिया और अधिक स्वायत्तता की मांग को जन्म दिया। आधुनिकीकरण और जनभागीदारी की शक्तियों के बीच संवाद ने भी भारत में क्षेत्रवाद के विकास में काफी हद तक योगदान दिया है। विभिन्न समूह अब भी राष्ट्रीय हितों के साथ अपने समूह के हितों के पोषण करने में लगे रहे हैं, इसलिए क्षेत्रवाद की भावना बनी हुई है।

- आर्थिक विषमताएँ और विकास में क्षेत्रीय असंतुलन।
- क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने में राष्ट्रीय राजनीति की विफलता।
- क्षेत्रीय नेताओं का करिश्माई व्यक्तित्व।
- केन्द्रीय स्तर पर मजबूत विपक्षी दल का अभाव।
- आदिवासी समूहों में अलगाव और असंतोष।

## अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के महत्व की पहचान करना।
- अब तक भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के विकास का कारण।
- बिहार में क्षेत्रीय दलों के विकास के लिए उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण करना।

## बिहार में क्षेत्रीय राजनीतिक दल

बिहार में क्षेत्रीय दलों का विकास स्वतंत्रता के पश्चात् ही हुआ है। बिहार के विकास में राजनीतिक दलों का विशेष भूमिका रहता हैं तथा राजनीतिक दलों का स्वरूप राष्ट्रीय या क्षेत्रीय दलों के किसी रूप में सम्भव है। लेकिन क्षेत्रीय दल विशेष रूप से जुड़े रहते हैं, जिसके कारण उसके द्वारा विकास के सम्भावना अधिक होती है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने कई राज्यों में सरकारें बनाई और राज्य की नीतियों और कार्यक्रमों को ठोस आकार देने का प्रयास भी किया है। हम कह सकते हैं कि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की सबसे बड़ी सेवा यह है कि उन्होंने दूर–दराज के क्षेत्रों में लोगों का ध्यान विभिन्न राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर केन्द्रित किया है और उनके राजनीतिक जागृति में योगदान दिया है। क्षेत्रीय दल का संबंध चुनौतियाँ और समस्याओं का समाधान करने से है परन्तु वास्तव में बहुत ही कम समस्याओं का समाधान होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने न केवल क्षेत्रीय राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है बल्कि राष्ट्रीय राजनीति पर भी जबरदस्त प्रभाव डाला है। बिहार की राजनीति को राज्य के दो प्रमुख वर्गो के बीच के संघर्ष के रूप में चित्रित किया गया है। अगड़ा और पिछड़ा, हालांकि मुंगेरी लाल कमीशन की अनुशंसा के आधार पर 1978 से अतिपिछड़ा वर्ग की नयी कोटि को परिभाषित किया गया। बिहार 38 जिलों से मिलकर बना एक राज्य है, जो 9 प्रशासनिक प्रभागों अर्थात् पटना, तिरहुत, सारण, दरभंगा, कोशी, पूर्णिया, भागलपुर, मुंगेर, मगध में विभाजित है। राजनीतिक रूप से बिहार की अपनी विधानसभा और विधान परिषद है, जिसमें क्रमशः 243 और 75 सदस्य है। बिहार में स्वतंत्रता के बाद से राजनीतिक दलों ने राजनीतिक प्रक्रिया के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाया है। विश्व में सभी राजनीति दलों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक मुख्य उद्देश्य होता है, राष्ट्र की प्रगति एवं मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना।

भारत एक विकासशील राष्ट्र है। यहाँ के क्षेत्रीय पार्टियों का मूल्यांकन प्राप्त वोटों के आधार पर होता है तथा पार्टियों को मत प्राप्त करने का आधार चिन्हित नहीं है। पार्टी प्रायः विकास जाति, धर्म, समुदाय, स्थानीय मुद्दे आदि पर वोट प्राप्त करते हैं। राज्यों के विकास की रूप रेखा निर्धारित करने के लिए भारतीय संविधान में कोई विशेषव्यवस्था नहीं की गई है। लेकिन भारत में सत्ता की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए पब्लिक अफेयर्स सेन्टर इंडिया कार्य करती है। जिसकी स्थापना 1994 में बैंगलुरू कर्नाटक में की गई। यह एक गैर–लाभकारी अनुसंधान थिंक टैंक है।

बिहार के क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उत्पत्ति की राजनीतिक पृष्ठभूमि के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इसकी उत्पत्ति राष्ट्रीय दलों विशेष रूप से कांग्रेस, जनता पाटी एवं अन्य समाजवादी दल के विघटन से हुआ है। बिहार के क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल (यूनाईटेड), जन अधिकारी पार्टी (लोकतांत्रिक), हिन्दुस्तान अवाम पार्टी, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), राष्ट्रीय लोक समता पार्टी का उदय एक ही दल से हुआ है तथा सभी पार्टिया जय प्रकाश नारायण, लोहिया, कर्पूरी आदि समाजवादी नेताओं के विचारधारा से प्रेरित है। वर्तमान परिदृश्य में बिहार में दो क्षेत्रीय राजनीतिक दल मुख्य रूप से सक्रिय है। 1. राष्ट्रीय जनता दल 2. जनता दल (यूनाइटेड)

### 1. राष्ट्रीय जनता दल

5 जुलाई 1997 को लालू प्रसाद यादव ने रघुवंश प्रसाद सिंह, कांति सिंह सहित 17 लोकसभा सदस्य एवं 8 राज्य सभा सदस्यों के साथ इस दल को नई दिल्ली में गठित किया। दल का राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव को बनाया गया। राष्ट्रीय जनता दल ने सामाजिक न्याय, धर्म निरपेक्षता एवं समाजवाद विचारधारा के प्रति आस्था को अपना उद्देश्य घोषित करती है।

### 2. जनता दल (यूनाइटेड)

जनता दल (यू) बिहार की एक राज्य स्तरीय पार्टी है। इस पार्टी का गठन 30 अक्टूबर 2003 को जनता दल के शरद यादव गुट, कर्नाटक के लोक शक्ति पार्टी और समता पार्टी के विलय के बाद किया गया। जनता दल (यू) समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, एकात्म मानववाद, लोकतंत्र के सिद्धान्तों एवं भारत की एकता, सम्प्रभुता और अखण्डता को बनाये रखने की विचारधारा को मानती है। न्याय के साथ विकास, समावेशी विकास, सुशासन की स्थापना को इसने अपना लक्ष्य घोषित किया। बिहार में अन्य क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने भी बिहार की राजनीति में अपनी भूमिका निभायी है।

हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा, विकासशील इंसान पार्टी, जन अधिकार पार्टी आदि उल्लेखनीय है।

**तालिका 2:** बिहार विधान सभा में क्षेत्रीय दलों की स्थिति (वर्ष 2005–2020)

| दलों के नाम | फरवरी 2005 | अक्टूबर 2005 | 2010 | 2015 | 2020 |
|---|---|---|---|---|---|
| बी.जे.पी. | 55 | 37 | 91 | 53 | 74 |
| बी.एस.पी. | 04 | 02 | | | 01 |
| सी.पी.आई. | 03 | 03 | | | 02 |
| सी.पी.एम. | 01 | 01 | 01 | | 02 |
| भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस | 09 | 10 | 04 | 27 | 19 |
| एन.सी.पी. | 01 | 03 | | | |
| सी.पी.आई.(एम.आई.एल.) | 05 | 07 | | | 12 |
| जद (यू) | 88 | 75 | 115 | 71 | 43 |
| लोजपा | 10 | 29 | 03 | 02 | 01 |
| राजद | 54 | 75 | 22 | 80 | 75 |
| सपा | 02 | 04 | | | |
| ए.जे.वी.डी | 01 | | | | |
| जे.एम.एम. | | | 01 | | |
| आर.एल.एस.पी. | | | | 02 | |
| हम | | | | 01 | 04 |
| वी.आई.पी. | | | | | 04 |
| ए. आई.एम.आई.एम. | | | | | 05 |
| अन्य | 10 | 17 | 06 | 07 | 01 |
| कुल | 243 | 243 | 243 | 243 | 243 |

इस तथ्य के अध्ययन से यही जानकारी मिलती है कि बिहार में 1990 से 2020 के चुनाव तक क्षेत्रीय राजनीतिक दल बहुमत की सीटें पाने और जीतने में सफल रहे हैं। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत की राजनीति में जब–जब परविर्तन का मशाल जला है, तो वह स्थान बिहार रहा है तथा राजनीति के गलियारे में विद्यमान अंधेरों को ज्योतिर्मय करने का काम ''एक बिहारी'' ने किया है।

## निष्कर्ष

क्षेत्रीय दलों की सफलता का मुख्य आधार उचित एवं शक्तिशाली नेतृत्व रहा है। बदलते राजनीतिक परिवेश में भारत में क्षेत्रीय दलों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है। बिहार में भी क्षेत्रीय दलों की सफलता का मुख्य आधार उचित एवं शक्तिशाली नेतृत्व रहा है। बिहार में 1990 से पहले जहाँ सत्ता का केन्द्र संघीय सरकार एवं एक दल विशेष होता था तथा राज्य की सरकारें उससे प्रभावित और नियंत्रित होती थी, वहीं 1990 के बाद बिहार की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की महत्वपूर्ण भूमिका हो गयी है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में क्षेत्रीय राजनीतिक दल सम्पूर्ण राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र–बिन्दु बनते जा रहे हैं।

पिछले तीन दशक में बिहार का राजनीतिक परिदृश्य बिल्कुल बदल गया है। क्षेत्रीय दलों ने राज्यों की अस्मिता तथा राज्यों के अधिकार की आवाज बुलन्द कर राज्यों को संविधान प्रदत्त स्वायत्तता की रक्षा करने का प्रयास किया है। क्षेत्रीय दलों के कारण अनेक राज्यों में प्रतियोगी दल प्रणाली या द्विदलीय व्यवस्था का चलन होने लगा जिससे संसदीय व्यवस्था का संचालन आसान हुआ। उनकी सबसे महत्वपूर्ण रचनात्मक भूमिका अपने राज्य विशेष के लिए केन्द्र सरकार से अधिकतम आर्थिक सुविधाओं की मांग के रूप में रही। इसने प्रादेशिक विषमता को दूर कर कुछ हद तक भारत के सर्वांगीण विकास को गति प्रदान किया है। प्रायः सभी क्षेत्रीय राजनीतिक दल चाहे उनकी विचारधारा कोई भी हो, केन्द्र की सरकार में किसी भी प्रकार से अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रयत्नशील रहने लगे हैं चाहे वे कभी अलग द्रविड़ राज्य की मांग करने वाले डी०एम० के हो अलग पंजाब राज्य की मांग करने वाले अकाली दल हों या फिर बिहार राज्य में विशेष दर्जा की मांग करने वाले जनता दल (यूनाइटेड) हो या राष्ट्रीय जनता दल इनके जैसे अन्य क्षेत्रीय राजनीतिक दल, सब के सब राष्ट्रीय राजनीति में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने के लिए प्रयासरत रहते हैं। ऐसी स्थिति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में काफी महत्वपूर्ण हो गया है।

हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि जब तक जनता सक्रिय रूप से राजनीति में भाग नहीं लेती, तब तक किसी भी लोकतंत्रात्मक पद्धति को बहुत अधिक समय तक जीवित नहीं रखा जा सकता। बिहार की क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने राजनीति से संबंधित उन विषयों को उठाया, जिनका सीधा प्रभाव उस क्षेत्र की जनता के जीवन पड़ पड़ता था और जिनके प्रति उनका सीधा भावनात्मक संबंध था। जैसे–आरक्षण, शराबबंदी, महिलासशक्तिकरण, रोजगार, भूखमरी, गरीबी, राजनीतिसमाजीकरण, सामाजिक न्याय संबंधित आदि विषयों को जोर–शोर से उठाया है और इन विषयों पर केन्द्र सरकार को केन्द्रानुमुख भी किया है। ऐसी परिस्थितियों में यह कहना बहुत गलत नहीं होगा कि सशक्त क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका के बिना हमारी संघीय प्रक्रिया अभी तक समाप्त हो गई होती क्योंकि ये क्षेत्रीय राजनीतिक दल ही राज्यों की स्वायत्तता तथा उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं।

दरअसल भारत जैसे विशाल देश में जहाँ भाषा, संस्कृति तथा भौगोलिक विस्तार में अत्यधिक विविधता है, क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उदय एवं उत्थान एक स्वभाविक एवं अनिवार्य–प्रक्रिया है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने ही विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हुए उनसे संबंधित समस्याओं की ओर सम्पूर्ण राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट करने में प्रमुख योगदान दिया है।

भारत जैसे बड़े देश में जहाँ 28 राज्य एवं 8 केन्द्रशासित प्रदेश तथा एक अरब चालीस करोड़ से भी ज्यादा जनसंख्या हो, किसी एक दल के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नियंत्रण कायम कर पाना बेहद मुश्किल है। खास तौर पर उस हालत में जब सरकार चुनने का काम आम जनता के हाथों में हो। क्षेत्रीय दलों के विषय में उपर्युक्त विवेचना से यह बात स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आती है कि बिहारा की वर्त्तमान राजनीतिक परिदृश्य में क्षेत्रीय राजनीतिक दल सम्पूर्ण राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बनते जा रहे हैं। यदि क्षेत्रीय पार्टियाँ एवं भारत के राष्ट्रीय पार्टियों का सामंजस्य हो जाए तो बिहार एक आदर्श एवं उत्कृष्ट राज्य बन सकता है। बस आवश्यकता है विचार एवं भावना को बदलने की।

## संदर्भ सूची


1. छिब्बर, पी० डेमोक्रेसी विदाउट एसोसिएशनः ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ पार्टी सिस्टम एंड सोशल क्लीवेज इन इंडिया, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, मिशिगन।
2. नारायण, इकबाल – स्टेट पॉलिटिक्स इन इंडिया; मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ 1976.
3. अहमद इम्त्याज, कुमार रजनीश बिहार एक परिचय; पटना पब्लिकेशन 2018.
4. श्रीवास्तव डॉ० नृपेन्द्र कुमार, बिहार का इतिहास; सुधा प्रकाशन, पटना, जनवरी 2014.
5. ठाकुर सकर्षण, बंधु बिहारी; प्रभात प्रकाशन, वर्ष जनवरी 2017.
6. www.eci.co.in
7. www.gov.bin.nic.in
8. www.vidhansabha.bih.nic.in